सं श्रो० वि०/कुरुक्षेता/27-86/48633 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन आयुवत, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) महाप्रवन्धक, हरियाणा राज्य परिवहन, कैथल, के श्रीमक श्री रमेश चन्द, पुत्र श्री देवी चन्द. 244, हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, कुरुक्षेत्र तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रींदौगिक विवाद है; श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अत्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला की विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीच लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रमेश चन्द. पुत्न देवी चन्द की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं औं वि /सोनीपत/38-86/48640.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैनेजर, हरियाणा रोडवेज, सोनीपत, के श्रीमक श्री मोहम्मद शरीफ, मार्फत राम सरूप लाकड़ा, इन्टक, सोनीपत तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

स्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय होतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इस लिये, श्रव श्रोद्योगिक, विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनग्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तया श्रमिक के वोच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री मोहम्मद शरीफ लौहार की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि । श्रम्बाला | 22-86 | 486 48. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में मारकण्डा वनस्पति मिल्ज लिं , शाहबाद मारकण्डा (कुरुक्षेत्र), के श्रमिक श्री कश्मीरा सिंह, पुत्र श्री जोगिन्द्र सिंह, मार्फत पं मधुसुदन पं शरन कोशिश लठमारां गली, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, अब, श्रोद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं03(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देन हेतु निद्धिट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री कश्मीरा सिंह, पुत्र श्री जोगिन्द्र सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 29 दिसम्बर, 1986

सं. भ्रो. वि. विभानी/133-86/49071.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि 1. परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, 2. जनरल मैनेजर, हरियाणा रोड़वेज जीन्द, के श्रमिक श्री रघवीर सिंह, पुत श्री लहरी सिंह, गांव घडा० जाटीया, तह० ववानी खेड़ा (भिवानी), तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस भें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्वन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री रघवीर सिंह, कन्डक्टर, पुत्र श्री लहरी सिंह की सेवाश्री का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक दार है ?